Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार – दलितों के विशेष संदर्भ में

सत्यनारायण सिंह शेखावत*

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, गरबाडा, दाहोद (गुजरात) भारत

शोध सारांश – डॉ. भीमराव अम्बेडकर महामानव थे। वे एक सच्चे देशभक्त थे तभी उन्होंने धर्म परिवर्तन हेतु अनेकानेक प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वह हिन्दु समाज द्वारा स्थापित सामाजिक व्यवस्था से काफी असंतुष्ट थे और उनमें सुधार की मांग करते थे ताकि सर्वधर्म सम्भाव पर आधारित समाज की स्थापना की जा सके। भारत में उनका जीवन सामाजिक सुधार के श्रेष्ठतम कार्य को समर्पित था। वे एक ऐसे समाज सुधारक थे जो मात्र भाषणों तक ही अपने को सीमित करने के बजाय स्वयं अपने जीवन और कार्यो से सामाजिक रूढिवादिता, जातिप्रथा और अस्पृश्यता को हटाने में जीवनभर लगे रहे। उन्होंने राजनीति के बजाय सामाजिक सुधार के क्षेत्र में कार्य करने को प्राथमिकता प्रदान की। उनका विश्वास था कि आर्थिक और राजनीतिक मामले सामाजिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति के बाद निपटाये जाने चाहिए। अम्बेडकर का विचार था कि आर्थिक विकास सभी सामाजिक समस्याओं का समाधान कर देगा। जातिवाद हिन्दुओं की मानसिक दासता की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार के जातिवाद के पिशाच/बुराई के निवारण के बिना कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। हमारे समाज मे क्रांतिकारी बदलाव के लिए सामाजिक सुधार पहली शर्त है। सामाजिक सुधारों में परिवार व्यवस्था में सुधार और धार्मिक सुधार भी शामिल है। अम्बेडकर ने भारतीय समाज में महिलाओं की गिरती स्थिति की कटु आलोचना की उनका मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दूधर्म में महिलाओं को सम्पति के अधिकार से वंचित रखा गया है। हिन्दू कोड बिल जो उन्होंने तैयार करवाया था उन्होंने यह ध्यान रखा कि महिलाओं को भी सम्पति में एक हिस्सा मिलना चाहिए। उन्होंने अस्पृश्यों को संगठित करते समय अस्पृश्य समुदाय की महिलाओं को आगे आने के लिए सदैव आहवान किया कि वे राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में भाग लें।

शब्द कुंजी – दलित, हिन्दु समुदाय, अस्पृश्यता, जाति प्रथा, वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, सामाजिक सुधार, सामाजिक न्याय, धार्मिक सुधार।

डॉ. अम्बेडकर के जाति प्रथा उन्मूलन संबंधी विचार – डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सपना था कि भारत जाति मुक्त हो, औधोगिक राष्ट्र बने, सदैव लोकतांत्रिक बना रहे। अम्बेडकर को एक दलित नेता के रूप में जानते है, जबकि उन्होंने बचपन से ही जाति प्रथा का खुलकर विरोध किया था। उन्होंने जातिवाद से मुक्त आर्थिक दृष्टि से सुदृढ भारत का सपना देखा था। मगर देश की गन्दी राजनीति ने उन्हें सर्व समाज के नेता के बजाय दलित समाज के नेता के रूप में स्थापित करा दिया।

डॉ. अम्बेडकर के भाषण भारतीय सामाजिक चिन्तन के इतिहास और विकास के कालजयी दस्तावेज है। 9 मई 1916 को कोलम्बिया विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठी में नृविज्ञान पर 'भारत में जाति प्रथा : संरचना, उत्पति और विकास' पर पठित लेख तथा लाहौर जातपात तोड़क मण्डल 1936 के वार्षिक सम्मेलन के लिए उनके द्वारा तैयार किया गया 'जाति प्रथा उन्मूलन' शीर्षक भाषण ऐतिहासिक महत्व के है। भारत में जाति प्रथा संरचना उत्पति और विकास आलेख में अम्बेडकर कहते है कि जाति की समस्या सैद्धान्तिक और व्यावहारिक रूप से एक विकराल समस्या है। वे जाति प्रथा की उत्पति के लिए भारत के विधि निर्माता मनु को जिम्मेदार ठहराते है। उनके शब्दों में 'मनु ने जाति के विधान' का निर्माण नहीं किया और न वह ऐसा कर सकता था। जाति प्रथा मनु से पहले विद्यमान थी। वह तो उसका पोषक था, इसलिए उसने उसे एक दर्शन का रूप दिया। प्रचलित जाति प्रथा को ही उसने संहिता का रूप दिया और जाति धर्म का प्रचार किया।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार प्रारम्भ में भारतीय समाज चार वर्गों में विभाजित था। ये है : – 1. ब्राहम्ण या पुरोहित वर्ग 2. क्षत्रिय वर्ग यां सैनिक वर्ग 3. वैश्य अथवा व्यापारिक वर्ग और 4. शुद्र अथवा शिल्पकार और श्रमिक वर्ग। इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि आरम्भ में यह अनिवार्य रूप से वर्ग विभाजन के अन्तर्गत व्यक्ति दक्षता के आधार पर अपना वर्ग बदल सकता था और इसलिए वर्गों को व्यक्तियों के कार्य की परिवर्तनशीलता स्वीकार्य थी। हिन्दू इतिहास में किसी समय पुरोहित वर्ग ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया और इस तरह स्वयं सीमित प्रथा से जातियों का सूत्रपात हुआ। दूसरे वर्ग भी समाज विभाजन के सिद्धान्तानुसार अलग–अलग खेमों में बंट गए। कुछ का संख्या बल अधिक था कुछ का नगण्य। वैश्य और शुद्र वर्ग मौलिक रूप से वे तत्व है, जिनकी जातियों की अनगिनत शाखा, प्रशाखाएं कालान्तर में उभरी है, क्योंकि सैनिक व्यवसाय के लोग असंख्य समुदाय में सरलता से विभाजित नहीं हो सकते, इसलिए यह वर्ण सैनिकों और शासकों के लिए सुरक्षित हो गया।

डॉ. अम्बेडकर का मानना है कि समाज का यह उप वर्गीकरण स्वाभाविक है, उपर्युक्त विभाजन में अप्राकृतिक तत्व यह है कि इससे वर्गों में परिवर्तनशीलता के मार्ग अवरूद्ध हो गए और वे संकुचित बनते चले गए,

जिन्होंने जातियों का रूप ले लिया। अम्बेडकर यह भी मानते हे कि कुछ जातियों की संरचना नकल से हुई है और नकल करने के दो आधार दिखलाई देते है। जिस स्त्रोत की नकल की गई है, उसकी समुदाय में प्रतिष्ठा होनी चाहिए। भारतीय समाज में जो सिख समुदाय से प्रतिदिन अनेक बार मिला है उसने उसे सममुदाय की नकल की। इसी प्रकार जो जातियां ब्राहम्णों के निकट है वे सती प्रथा, बालिका विवाह जैसे प्रथाओं की नकल का कड़ाई से पालन करती है। अम्बेडकर के शब्दों में, इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत में जाति प्रथा निम्न वर्ग द्वारा उच्च वर्ग की नकल का प्रतिफल है।

जाति समस्या के संबंध में डॉ. अम्बेडकर ने अपने आलेख में चार पक्ष उजागर किए है:-

1. हिन्दू जनसंख्या में विविध तत्तवों के सम्मिश्रण के बावजूद इसमें दृढ सांस्कृतिक एकता है,
2. जातियां इस विराट सांस्कृतिक इकाइ अंग है,
3. शुरू में केवल एक ही जाति थी,
4. इन्हीं वर्गो मे देखा-देखी या बहिष्कार से विभिन्न जातियां बन गई।

अपने दूसरे भाषण में जिसे लाहौर जातपात तोड़क मण्डल 1936 के वार्षिक सम्मेलन के लिए तैयार किया गया था और जिसका शीर्षक जाति प्रथा उन्मूलन है, डॉ. अम्बेडकर ने इस प्रश्न पर विचार किया है कि क्या भारत में सामाजिक सुधार राजनीतिक सुधारो से पहले होने चाहिए। अम्बेडकर इस विचार से सहमत नहीं है कि हम अपनी सामाजिक प्रणाली में सुधार नहीं करेंगे, जब तक हम राजनीतिक सुधारों के योग्य नहीं हो जाते। उन दिनों अछूतों के साथ कैसा व्यवहार होता था। इसका चित्रण करते हुए अम्बेडकर कहते है मराठा राज्य में पेशवाओं के शासन में यदि कोई हिन्दू सड़क पर आ रहा होता था तो किसी अछूत को इसलिए उस सड़क पर चलने की अनुमति नहीं थी कि उसकी परछाई से वह हिन्दू अपवित्र हो जाएगा। अछूत के लिए यह आवश्यक था कि वह अपनी कलाई या गर्दन में निगरानी के तौर पर एक काला धागा बांधे, जिससे कि हिन्दू गलती से उससे छूकर अपवित्र ना हो जायें।

डॉ. अम्बेडकर का मत है कि हिन्दू परिवार के सुधार और हिन्दू समाज के पुनर्गठन तथा पुनर्निर्माण के अर्थ में समाज सुधार इन दोनों में अन्तर किया जाए। पहले प्रकार के समाज सुधार का संबंध विधवा विवाह, बाल विवाह आदि से है। जबकि दूसरे प्रकार के समाज सुधार का संबंध जाति प्रथा के उन्मूलन से है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार भारत में जाति प्रथा का समर्थन सर्वप्रथम इस आधार पर किया जाता है कि जाति प्रथा श्रम के विभाजन का एक अन्य नाम ही है। यदि श्रम का विभाजन प्रत्येक सभ्य समाज का एक अनिवार्य-लक्षण है, तो यह दलील दी जाती है कि जाति प्रथा में कोई बुराई नहीं है। अम्बेडकर इस विचार के विरूद्ध तर्क देते हुए कहते है कि जाति प्रथा केवल श्रम का विभाजन नहीं है, यह श्रमिकों का विभाजन भी है। यह एक श्रेणीबद्ध व्यवस्था है जिसमें श्रमिकों का विभाजन एक के उपर दूसरे क्रम में होता है। किसी भी अन्य देश में श्रम के विभाजन के साथ श्रमिकों का इस प्रकार का क्रम नहीं होता। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जाति प्रथा से असामाजिक तत्वों को बढावा मिलता है। ब्राहम्णों का मुख्य उद्देश्य यह है कि गैर-ब्राहम्णों के विरूद्ध अपने स्वार्थ की रक्षा करें और गैर ब्राहम्णों का मुख्य उद्देश्य है कि ब्राहम्णों के विरूद्ध अपने स्वार्थ की रक्षा करें। इसलिए हिन्दू समुदाय विभिन्न जातियों का एक संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि वह शत्रुओं का समुदाय है।

डॉ. अम्बेडकर द्वारा वर्ग व्यवस्था की आलोचना- भारतीय समाज व्यवस्था का संगठन चार वर्गों के आधार पर होता है। ये वर्ग थे ब्राहम्ण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र। अम्बेडकर चतुवर्गीय व्यवस्था के प्रबल आलोचक थे। इस विभाजन मे शुद्रो के हितों की रक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। यहां तक कि शुद्रों के लिए ज्ञान प्राप्ति भी वर्जित था। शिक्षा और अपनी आत्मरक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपरिहार्य है, शुद्रों की रक्षा और सेवा की अपने जीवन का ध्येय बनाया था।

डॉ. अम्बेडकर के अस्पृश्यता संबंधी विचार -डॉ. अम्बेडकर अस्पृश्यता के खिलाफ थे। अस्पृश्यता अमानवीय और औचित्य रहित प्रथा थी। इससे भारतीय समाज की एकता प्रभावित होती थी। उन्होंने धर्मशास्त्र और भारतीय साहित्य के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि अस्पृश्यता मनुष्यकृत दुर्गुण है न कि इश्वरीय कृति। वर्तमान में अस्पृश्यों की स्थिति बड़ी शोचनीय है। अत: उनकी सामाजिक दशा को सुधारने के लिए आर्थिक और सामाजिक प्रयत्न उपेक्षित है।

डॉ. अम्बेडकर द्वारा दिए गए सुझाव :

शिक्षा - अम्बेडकर का विश्वास था कि शिक्षा अस्पृश्यों के सुधार में महत्वपूर्ण योगदान देगी। उन्होंने अपने अनुयायियों को सदैव ज्ञान के क्षेत्र में उच्चता तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया शिक्षा व्यक्ति को अपने आत्म सम्मान के प्रति जागरूक बनाती है और उन्हें बेहतर भौतिक जीवन की ओर पहुंचने में सहायता प्रदान करती है। अम्बेडकर ने ब्रिटिश शिक्षा नीति की आलोचना की है कि इसने निम्न जातियों में शिक्षा को समुचित रूप में बढ़ावा नहीं दिया। उन्होंने महसूस किया कि अंग्रेजी राज में भी शिक्षा पर उच्च जातियों का एकाधिकार जारी रहा। इसलिए उन्होंने निम्न जातियों और अस्पृश्यों को गतिशील बनाया और सीखने के कई केंद्रों की नीव रखी। अम्बेडकर अस्पृश्यों को उदार शिखा और तकनीकी शिक्षा प्रदान करना चाहते थे। वे धार्मिक सहयोग से शिक्षा दिए जाने के विरोधी थे। उन्होंने चेतावनी दी कि केवल धर्मनिरपेक्ष शिक्षा छात्रों में स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों की प्रस्थापना कर सकती है।

आर्थिक प्रगति - अम्बेडकर ने कहा कि अस्पृश्य अपने आप को ग्रामीण समुदाय और इसकी आर्थिक जकड़न से मुक्त कर लें परम्परागत ढांचे में अस्पृश्य कोई विशेष व्यवसाय करने को बाध्य थे। वे अपने जीवनयापन के लिए हिंदू जातियों पर आश्रित थे। अम्बेडकर का हमेशा से मानना था कि अस्पृश्यों को अपने परंपरागत व्यवसाय बंद कर देने चाहिए और नई तकनीकी हासिल करनी चाहिए और नये व्यवसाय शुरू करने चाहिए। नये व्यवसाय करने में शिक्षा सहायक होगी। ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आश्रित रहने का कोई बिन्दू ही नहीं है शहरो में बढत औद्योगिकीकरण के परिणाम स्वरूप शहरो में भरपूर रोजगार के अवसर है। यदि अस्पृश्यों के लिए गांवों में रूकने की आवश्यकता नहीं हो तो गांवों को छोड़ देना चाहिए और इसके बावजूद यदि अस्पृश्यों को गांव में रहना पड़े तो उन्हें अपने पुश्तैनी काम को छोड़ आजीविका के नये साधन ढूंढने चाहिए। इससे उनका आर्थिक सुधार होगा। अम्बेडकर का मानना था कि दलित वर्ग को अपने आप आत्म सम्मान पैदा करना चाहिए एवं सहायता की नीति उनके उत्थान की सर्वोतम नीति है। वे कठिन परिश्रम के समर्थक थे। वे मानवतावाद, सहानुभूति, परोपकार आदि के आधार पर समाज सुधारों में विश्वास नहीं करते थे। उनका मानना था कि संघर्ष द्वारा ही अपने अधिकारों को जीतना चाहिए।

राजनीतिक में सहभागिता- अम्बेडकर ने दलित वर्गों को राजनीति में

सहभागिता देने को महत्त्व दिया। अम्बेडकर ने कहा राजनीति शक्ति प्राप्त कर दलित अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते है। अम्बेडकर चाहते थे कि दलित राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करे और शक्ति में पर्याप्त हिस्सा प्राप्त करें। इसलिए उन्होंने अस्पृश्यों के राजनीतिक संगठन बनायें।

अछूत स्वयं अपना सुधार करें – एक ओर जहां डॉ. अम्बेडकर ने जाति-प्रथा, वर्गाश्रम और छूआछूत का विरोध किया तथा दलितों के प्रति संवर्ग जातियों के व्यवहार पर कठोर प्रहार किया, वहीं इस बात की ओर भी स्पष्ट संकेत किया कि अछूत वर्ग अपनी वर्तमान स्थिति के लिए काफी सीमा तक स्वयं उत्तरदायी हैं। स्वयं अछूतों के कुछ कार्य और उनकी आदते ऐसी है कि वे उनमें आगे बढ़ने की प्रेरणा नहीं दे सकती। वे इस बात पर जोर देते थे कि जीवन में आत्म सम्मान की भावना विकसित होनी चाहिए। उनका सुझाव था कि दलितो को संगठित होना चाहिए। उन्हें शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए तथा अन्याय और अत्याचार के विरोध में संघर्ष करना चाहिए। वे चाहते थे कि दलित सरकारी नौकरियों में जाएं, अच्छे कार्य करें, खेती और व्यवसाय करें तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा दें। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर भी जोर दिया। वे चाहते थे कि अछूत महिलाएं साफ-सुथरी रहे, अच्छे कपड़े पहने तथा घर-परिवार को साफ सुथरा रखें।

निष्कर्ष – डॉ. अम्बेडकर का भारतीय समाज के लिए बड़ा योगदान रहा उन्होंने शोषित, दलित वर्ग को जागृत किया, संगठित किया, उन्हें उनको यथास्थिति बताई, उन्हें वाणी दी तथा संघर्ष के लिए तैयार किया। राजनीति में भूमिका के लिए प्रेरित किया और राजनीति शक्ति प्राप्त करने को कहा। दलित वर्ग को अपने पारम्परिक कार्य बंद कर नये आजीविका के साधन ढूंढने के लिए प्रेरित किया, दलित अपने आप को मजबूत स्थिति में खड़ा कर सकते है यदि वो अपने आप में सुधार करे टी.के. टोपे के अनुसार अम्बेडकर का पांडित्य तथा ज्ञान निस्संदेह उच्च था। सम्भव है कि आने वाली पीढ़िया अम्बेडकर की राजनीतिक उपलब्धियां को याद न रखें पर ज्ञान के क्षेत्र में उनकी श्रेष्ठ उपलब्धियों को भूलाया नहीं जा सकता। राजनेता, सामाजिक, क्रांतिकारी और बौद्ध धर्म के आधुनिक व्याख्याकार के रूप में डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भूलाया जा सकता है, पर एक विद्वान के रूप में वे अमर रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. जनक सिंह मीना, भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था एवं शासन प्रणाली डॉ. जनक सिंह मीना दानालपुर 2020.
2. क्रिस्तोफ जाफ्रलों: भीमराव अम्बेडकर एक जीवनी, जाति उन्मूलन का संघर्ष एवं विश्लेषण, राजकमल प्रकाशन 2019.
3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर : भारत का संविधान – बुद्धम पब्लिशर।
4. डॉ. किरन भारती, डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचार एवं प्रासंगिकता, आकाश पब्लिकेशन एवं डिस्ट्रीबुटर्स।
5. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, जात पात का विनाश, बुद्धम पब्लिशर : पहला संस्करण (1 जनवरी 2019)।
6. डॉ. नरेंन्द्र जाधव, डॉ. अम्बेडकर आत्मकथा एवं जनसंवाद, प्रभात प्रकाशन।
7. एम.एल. शहारे, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन और कार्य, पब्लिशर नेशनल काउन्सिल ऑफ एजुकेशनल रिर्सच एण्ड ट्रेनिंग।
8. डॉ. परमानन्द प्रमोद कुमार, डॉ. अम्बेडकर और एक मनुवादी विश्लेषण कल्पाज पब्लिकेशन।
9. नितिश विश्वास, राष्ट्रनेश डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, वाणी प्रकाशन।
10. www.webdunia.com.
11. https://navbharatimes.indiatimes.com

****